International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 1, Issue 1, September 2014 |

राष्ट्रीय सेवा योजना का देश के सामाजिक विकास में योगदान

[1]Krisn Pratap Meena & [2] Amarchand Kumawat

[1]Lecturer, Dept. of Mathematics, S.B.D. Govt. College, Sardarshahar, Rajasthan, India

[2]Lecturer, Dept. of Chemistry, S.B.D. Govt. College, Sardarshahar, Rajasthan, India

सार

राष्ट्रीय सेवा योजना (National Service Scheme-NSS) राष्ट्र की युवाशक्ित के व्यक्तित्व विकास हेतु युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित एक सक्रिय कार्यक्रम है।[1] इसके गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी, समाज के लोगों के साथ मिलकर समाज के हित के कार्य करते है। साक्षरता संबंधी कार्य, पर्यावरण सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं सफाई आपातकालीन या प्राकृतिक आपदा के समय पीड़ीत लोगों की सहायता आदि। विद्यार्थी जीवन से ही समाजपयोगी कार्यों में रत रहने से उनमें समाज सेवा या राष्ट्र सेवा के गुणो का विकास होता है। नेहरू युवा केंद्र की स्थापना सन 1972 में की गई थी। नेहरू युवा केंद्र संगठन (NYKS) भारत सरकार के तहत युवा मामले और खेल मंत्रालय का एक स्वतंत्र निकाय है। इस संगठन में राष्ट्र के लिए गतिविधियों में यूथ क्लबों के माध्यम से युवाओं को शामिल किया जाता है और उन्हें मेहनती और जवाबदेह भारतीय नागरिक बनने के लिए कौशल और मूल्यों के साथ प्रशिक्षित किया जाता है। नेहरू युवा केंद्र संगठन में एक प्रतिष्ठित युवाओं को काम के लिए ऊर्जावान और प्रतिबद्ध बनाता है।

नेहरू युवा केंद्र में जॉब नेहरू युवा केंद्र में राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक के रूप में युवा नेहरू युवा केंद्र ज्वाइन कर सकता है जिसे एन वाई वी कहते हैं। NYV के रोल युवा क्लबों और विकास विभागों के बीच एनवाईवी की उत्प्रेरक एजेंट की प्रमुख भूमिका है। NYV को अपने ब्लॉक का यूथ प्रोफाइल तैयार करना होता है। NYV आईटी सेवी होने के लिए आवश्यक है, युवा कार्यक्रम की रिपोर्ट / प्रलेखन तैयार करने और ऑनलाइन अपलोड करने की क्षमता होनी चाहिए। NYv को मीडिया / समाचार विवरण के लिए रिपोर्ट तैयार करने के बारे में भी जानकारी दी जाती है। आवश्यक मोबाइल ऐप्स का उपयोग करना जानना जरूरी है (उदाहरण के लिए डिजीधन, डिजिटल इंडिया आदि)। नए युवा क्लबों का गठन, अयोग्य युवा क्लबों की सक्रियता प्रत्येक स्वयंसेवक का प्रमुख कार्य है। युवा क्लबों की मदद से एनवाईके नियमित और विशेष कार्यक्रम का आयोजन करना। समुदाय विकास कार्यक्रम में खुद को शामिल करने के लिए युवा क्लब के सदस्यों का मार्गदर्शन करना और उन्हें प्रेरित करना। एनआईसी, कौशल प्रशिक्षण के लिए युवा क्लबों के सक्रिय / समर्पित सदस्यों की सिफारिश करना, DISTRICT YOUTH COORDINATOR को अंतरराष्ट्रीय युवा विनिमय कार्यक्रम आदि युवा क्लबों द्वारा संचालित प्रोग्रामो के रिकॉर्ड को बनाए रखना। नियमित रूप से अपने काम को उजागर करने वाली नियमित रिपोर्ट / ऑनलाइन रिपोर्ट प्रस्तुत करना। ब्लॉक / जिले में विकास विभागों और युवा कार्य एजेंसियों के साथ संपर्क बनाए रखना। संबंधित केंद्र में नियमित रूप से बैठकों में भाग लेना। नेहरू युवा केंद्र में जिला युवा समन्वयक भी होता है जिसके अंडर एन वाई वी काम करता है।

जिला युवा समन्वयक की भूमिका :- संबंधित जिला युवा समन्वयक चयन समिति के संयोजक होने के नाते, पूरी चयन प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता और निष्पक्षता बनाए रखने के लिए जिम्मेदार होता है। युवा समन्वयक राज्य निदेशक को नियमित आधार पर चयन के लिए उठाए गए सभी कदमों की जानकारी देना आवश्यक होता है। प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण (टीओटी) राज्य निदेशक एक मान्यता प्राप्त प्रशिक्षण संस्थान में एनवाईकेएस अधिकारियों और संसाधन व्यक्तियों के लिए दो दिन टीओटी आयोजित करने के लिए जिम्मेदार होता है। नेहरू युवा केंद्र जॉब प्रोफाइल :- नेहरू युवा केंद्र स्वयंसेवक वेतन :- अधिकारियों द्वारा सूचीबद्ध सकल परिलब्धियों के अनुसार 5000 / – रुपए प्रति माह एन वाई वी को दिया जाता है। इसमें तैनाती सिर्फ दो साल के लिए की जाती है। नेहरू युवा केंद्र सफाई अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, स्वच्छता जागरूकता, बीमारियों प्रति जागरूकता, खेल सामग्री वितरित करना, हमारे वीर क्रांतिकारियों की जन्मदिन व शहीदी दिवस मनाना, युवा सप्ताह मनाना, सफाई अभियान,बच्चे, बूढ़े, महिलाओं की रेस करवाना तथा समय-समय पर ग्रामीणों को, युवाओं को, महिलाओं को, बेटियों को जागरूक करना तथा उनके अधिकार बताना आदि बहुत से कार्य करता है।

IJARASEM | ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 1, Issue 1, September 2014 |

परिचय

स्वैच्छिक समुदाय सेवा के माध्यम से युवा छात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र के विकास के प्राथमिक उद्देश्य से राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) को 1969 में शुरू किया गया था। शुरूआत में इसे 37 विश्वविद्यालयों में शुरू किया गया था जिसमें लगभग 40,000 स्वयंसेवियों को शामिल किया गया था। हालांकि, समय बीतने के साथ-साथ अखिल भारतीय कार्यक्रम बन गया। एनएसएस के अंतर्गत आने वाले शैक्षणिक संस्थानों की संख्या में प्रतिवर्ष बढ़ोत्तरी हो रही है। वर्तमान में 39,695 एनएसएस इकाइयों में 36.5 लाख से अधिक स्वयंसेवी हैं जो देश के 391 विश्वविद्यालयों / +2 परिषदों, 16,278 कॉलेजों और तकनीकी संस्थानों तथा 12,483 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में फैले हुए हैं। इसकी स्थापना के बाद से, 4.78 करोड़ छात्रों को एनएसएस से लाभ हुआ है।[1]

प्रत्येक एनएसएस स्वयंसेवी को प्रति वर्ष कम से कम 120 घंटे अर्थात दो साल में 240 घंटे की सेवा करना अनिवार्य होता है। यह कार्य एनएसएस शाखाओं द्वारा अपनाए गए गांवों/झोपड़ियों या स्कूल / कॉलेज परिसरों में किया जाता है। आमतौर पर अध्ययन के घंटों के बाद इसे सप्ताहांत / छुट्टियों के दौरान किया जाता है। इसके अलावा, प्रत्येक एनएसएस इकाई स्थानीय समुदायों को शामिल करके कुछ विशेष परियोजनाओं के साथ छुट्टियों में अपनाए गए गांवों या शहरी झुग्गियों में 7 दिनों की अवधि के विशेष शिविरों का आयोजन करती है। प्रत्येक स्वयंसेवक को 2-वर्ष की अवधि के दौरान एक बार विशेष शिविर में भाग लेना जरूरी होता है। इस प्रकार, एक इकाई से लगभग 50 प्रतिशत एनएसएस स्वयंसेवी विशेष शिविर में भाग लेते हैं।[2]

एनएसएस इकाइयां उस गतिविधि का आयोजन कर सकती है जो समुदाय के लिए प्रासंगिक है। समुदाय की जरूरतों के अनुसार गतिविधियां जारी हैं। मुख्य गतिविधियों वाले क्षेत्रों में शिक्षा और साक्षरता, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण और पोषण, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सेवा कार्यक्रम, महिलाओं की स्थिति में सुधार, उत्पादन उन्मुख कार्यक्रम, आपदा राहत तथा पुनर्वास संबंधी कार्यक्रम, सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान, डिजिटल भारत, कौशल भारत, योग इत्यादि जैसे प्रमुख कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता पैदा करना आदि शामिल है।[3]

1. भारत में छात्रों को राष्ट्रीय सेवा के कार्य में शामिल करने का विचार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के समय का है। केंद्रीय थीम जिसे उन्होंने छात्रों के लिए बार-बार जोर दिया वह यह थी कि उन्हें अपने समक्ष सदैव अपनी सामाजिक जिम्मेदारी रखनी चाहिए छात्रों का प्रथम कर्तव्य उनके अध्ययन की अवधि को केवल बौद्धिक ज्ञान तक ही सीमित न रखकर स्वयं को ऐसे व्यक्तियों की सेवा में समर्पित करना है जिन्होंने राष्ट्र की वस्तुओं और सेवाओं के साथ हमारे देश को आवश्यक चीजें प्रदान की है जो कि समाज के लिए अति आवश्यक है। उन्हें समुदाय के साथ जीवंत संपर्क स्थापित करने की सलाह देते हुए जिनके मस्तिष्क में उनकी संस्थाएं स्थापित थीं, उन्होंने यह सुझाव दिया कि आर्थिक और सामाजिक निशक्तता के स्थान पर शैक्षिक शोध के स्थान पर छात्रों को कुछ सकारात्मक करना चाहिए ताकि ग्रामीण वासियों के जीवन को अधिक ऊँचा और नैतिक स्तर पर उठाया जा सके।

2. स्वतंत्रता पश्चात् का युग छात्रों के लिए सामाजिक सेवा आरंभ करने के रूप में देखा जा सकता है जो कि शैक्षिक सुधार और शिक्षित कार्मिकों की गुणवत्ता में सुधार के साधन दोनों के रूप में है। डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने एक ओर छात्रों और शिक्षकों के बीच स्वस्थ संपर्क विकसित करने और दूसरी ओर कैम्पस और समुदाय के बीच सकारात्मक संपर्क स्थापित करने की दृष्टि से स्वैच्छिक आधार पर शैक्षिक संस्थाओं में राष्ट्रीय सेवा आरंभ करने की सिफारिश की।[4]

3. इस विचार पर केंद्रीय सलाहकार बोर्ड (सीएबीई) की जनवरी, 1950 में आयोजित बैठक में पुन: विचार किया गया। इस मामले के विभिन्न पहलुओं की जांच करने के पश्चात् और इस क्षेत्र में अन्य देशों के अनुभव को देखते हुए बोर्ड ने यह सिफारिश की कि छात्रों को स्वयंसेवी आधार पर मैनुअल कार्य हेतु कुछ समय समर्पित करना चाहिए और शिक्षकों को ऐसे कार्यों में उनके साथ जोड़ना चाहिए। भारत सरकार द्वारा 1952 में अपनाई गई मसौदा प्रथम पंचवर्षीय योजना में छात्रों के लिए एक वर्ष हेतु सामाजिक एवं श्रम सेवा की आवश्यकता पर और अधिक जोर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं द्वारा श्रमिक एवं सामाजिक सेवा, कैम्पस कार्य परियोजनाएं, ग्रामीण अप्रेंटसशिप योजना इत्यादि का संचालन किया गया। 1958 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने मुख्यमंत्रियों को लिखे गए अपने पत्र में स्नातक शिक्षा

के लिए पूर्व अपेक्षित के रूप में सामाजिक सेवा का विचार आगे बढ़ाया। उन्होंने शिक्षा मंत्री को शैक्षिक संस्थाओं में राष्ट्रीय सेवा आरंभ करने का भी निर्देश दिया।[5]

4. 1959 में शिक्षा मंत्री के सम्मेलन के समक्ष योजना का एक मसौदा रखा गया। यह सम्मेलन राष्ट्रीय सेवा के लिए एक कार्य योग्य योजना आरंभ करने की तत्काल आवश्यकता के बारे में एक मत था। इस मत को देखते हुए कि शिक्षा जो कि स्कूलों और कॉलेजों में प्रदान की जा रही थी में अपेक्षित कुछ छूट रहा था और इसे ऐसे कार्यक्रमों के साथ अनुपूरक करना आवश्यक था जो देश के सामाजिक और आर्थिक पुर्ननिर्माण के हित तैयार करते है। यह विचार रखा गया कि यदि योजना के उद्देश्य को मूर्त रूप दिया जाना है तो सामाजिक सेवा को जल्दी से जल्दी शिक्षा की प्रक्रिया के साथ समेकित करना आवश्यक होगा। सम्मेलन में यह सुझाव दिया कि प्रस्तावित प्रायोगिक परियोजना के ब्यौरे तैयार करने के लिए एक समिति की नियुक्ति की जाए। इन सिफारिशों के अनुसरण में इस दिशा में सटीक सुझाव देने के लिए 28 अगस्त, 1959 को डॉ. सी.डी. देशमुख की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय सेवा समिति की नियुक्ति की गई। इस समिति ने यह सुझाव दिया कि 9 महीने से लेकर 1 वर्ष तक की राष्ट्रीय सेवा हाई सकूली शिक्षा पूरी करने वाले और कॉलेज अथवा विश्वविद्यालय में दाखिला लेने के इच्छुक सभी छात्रों के लिए अनिवार्य बना दी जाए। इस योजना में कुछ सेना प्रशिक्षण, सामाजिक सेवा, मैनुअल श्रम और सामान्य शिक्षा भी शामिल किए जाने अपेक्षित थे। समिति की सिफारिशों को इसके कार्यान्वयन में वित्तीय निहतार्थों और कठिनाईयों के कारण स्वीकार नहीं किया जा सका।

5. 1960 में भारत सरकार की पहलता पर प्रो. के.जी. सैय्यदेन ने विश्व के कई देशों में क्रियान्वित छात्रों द्वारा राष्ट्रीय सेवा का अध्ययन किया और कई सिफारिशों के साथ सरकार को 'युवाओं के लिए राष्ट्रीय सेवा' शीर्षक के तहत अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। जैसे कि भारत में छात्रों द्वारा सामाजिक सेवा की व्यवहार्य योजना तैयार करने के लिए क्या किया जाना चाहिए। यह भी सिफारिश की गई कि सामाजिक सेवा कैंपों को बेहतर अंतर-संबंधों के लिए निर्धारित आयु-समूहों के भीतर विद्यार्थियों और साथ ही गैर- विद्यार्थियों के लिए भी खोल देना चाहिए।[6]

6. डॉ. डी.एस. कोठारी (1964-66) की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग ने यह सिफारिश दी की शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों को सामाजिक सेवा के किसी रूप से जोड़ा जाना चाहिए। इस पर अप्रैल, 1967 में राज्य शिक्षा मंत्री द्वारा उनके सम्मेलन के दौरान विचार किया गया और उन्होंने यह सिफारिश की कि विश्वविद्यालय सतर पर छात्रों को राष्ट्रीय कैडेट कार्प्स (एनसीसी) जो स्वयंसेवी आधार पर पहले ही अस्तित्व में थी को ज्वाइन करने की अनुमति दी जा सकती है और इसके विकल्प के रूप में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) नामक एक नया कार्यक्रम प्रदान किया जा सकता है। तथापि, प्रबुद्ध खिलाड़ियों को इन दोनों से छूट देनी चाहिए तथा उन्हें खेलों तथा एथलीटों के विकास की वरीयता की आवश्यकता को देखते हुए राष्ट्रीय खेल संगठन (एनएसओ) नामक एक योजना ज्वाइन करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

7. सितम्बर, 1969 में कुलपतियों के सम्मेलन में इस सिफारिश का स्वागत किया गया और यह सुझाव दिया गया कि कुलपतियों की एक विशेष समिति का इस मुद्दे पर विस्तार से जांच करने हेतु गठन किया जा सकता है। भारत सरकार की शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय नीति के वक्तव्य में यह उल्लेख किया गया कि कार्यानुभव और राष्ट्रीय सेवा को शिक्षा का समेकित भाग होना चाहिए। मई 1969 में शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थाओं के छात्र प्रतिनिधियों के सम्मेलन में एकमत से यह घोषणा की गई कि राष्ट्रीय सेवा राष्ट्रीय एकता के लिए सशक्त माध्यम हो सकती है। इसका शहरी छात्रों को ग्रामीण जीवन से परिचित कराने के लिए उपयोग किया जा सकता है। राष्ट्र की प्रगति और उत्थान के लिए छात्र समुदाय के योगदान के प्रतीक के रूप में स्थायी मूल्य की परियोजनाएं भी चलाई जा सकती हैं।[7]

8. शीघ्र ही इसके ब्यौरे तैयार किए गए और योजना आयोग ने राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के लिए चौथी पंचवर्षीय योजना के लिए 5 करोड़ रूपए का बजटीय परिव्यय स्वीकृत किया। यह निर्धारित किया गया कि एनएसएस कार्यक्रम को चुनी गई संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में एक प्रायोगिक परियोजना के रूप में आरंभ किया जाना चाहिए।

9. 24 सितम्बर, 1969 को तत्कालनी शिक्षामंत्री डॉ. वी. के. आर.वी. राव ने सभी राज्यों को शामिल करते हुए 37 विश्वविद्यालयों में एनएसएस कार्यक्रम आरंभ किया और साथ ही राज्यों के मुख्यमंत्रियों को उनके सहयोग और सहायता का अनुरोध किया। यह उपयुक्त था कि कार्यक्रम गांधी शताब्दी वर्ष के दौरान आरंभ किया जाए चूंकि गांधी जी ने भारत के युवाओं को भारत की स्वतंत्रता के आंदोलन में तथा हमारे राष्ट्र के निचले पायदान वाले लोगों के समाजिक उत्थान में भाग लेने के लिए प्रेरित किया था।[8]

10. इस कार्यक्रम का मूलभूत सिद्धांत यह था कि किसे स्वयं छात्रों द्वारा आयोजित किया जाता है और छात्र एवं शिक्षक दोनों सामाजिक सेवा में समेकित भागीदारी के माध्यम से राष्ट्रीय विकास के कार्यों में भागीदारी की भावना प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त विशेषकर छात्र ऐसे कार्यानुभव प्राप्त करते हैं जो उन्हें स्व-रोजगार अथवा उनके विश्विद्यालय करियर के अंत में किसी संगठन में रोजगार के अवसर प्राप्त करने में सहायक हों। आरंभ में प्रतिवर्ष प्रति एनएसएस छात्र 120 रूपए के व्यय

के वित्तीय प्रबंध प्रदान किए गए जिन्हें केंद्र तथा राज्य सरकारों के बीच 7:5 के अनुपात में साझा किया जाना था अर्थात् केंद्र सरकार द्वारा 70 रूपए तथा राज्य सरकार द्वारा 50 रूपए प्रति वर्ष प्रति एनएसएस छात्र के लिए व्यय किया जाना अपेक्षित था। 120 रूपए प्रति एनएसएस छात्रप्रति वर्ष की राशि केंद्र और राज्य सरकारों के बीच 7:5 के अुनपात में साझा की जानी अपेक्षित थी (अर्थात् केंद्र सरकार द्वारा 70 रूपए प्रति छात्र और राज्य सरकार द्वारा 50 रूपए प्रति छात्र) अब, एनएसएस भारत सरकार की एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है और सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में इसकी गतिविधियों तथा कार्यक्रमों के संचालन का केंद्र सरकार द्वारा पूर्णत: वित्तपोषण किया जाता है। अवमूल्यन को ध्यान में रखते हुए विशेष कैम्पिंग और नियमित गतिविधियों के लिए बजट निम्नानुसार है:[9]

इस योजना का अब देश में सभी राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों तथा विश्वविद्यालयों में विस्तार किया गया है इसमें कई राज्यों ने +2 स्तर की परिषदें भी शामिल की गई हैं। छात्र, शिक्षक, अभिभावक, सरकार ने अधिकारी, विश्वविद्यालय और कॉलेजों/स्कूलों तथा सामान्य रूप से लोग अब एनएसएस की आवश्यकता और महत्व को महसूस करते हैं। इसने युवा छात्रों के बीच जीवन की वास्तविकताओं के प्रति जागरूकता, लोगों की समस्याओं की बेहतर समझ पैदा की है। अत: एनएसएस समुदाय की आवश्यकताओं के संगत परिसरों को बनाने का एक सटीक प्रयास है। एनएसएस की इकाईयों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों और उदाहरण और घटनाएं हैं जिन्हें लोगों की प्रशंसा, सम्मान और विश्वास हासिल हुआ है। शीर्षक 'यूथ एगेन्सट फेमाइन (1973)', 'यूथ एगेन्सट डर्ट एंड डिजीज (1974-75)', 'यूथ फॉर इको-डवलपमेंट' और 'यूथ फॉर रूरल रीकंस्ट्रक्शन' –'यूथ फॉर नेशनल डवलपमेंट एंड यूथ फॉर लिटरेसी (1985-93), 'यूथ फॉर नेशनल इंटीग्रेशनएंड कम्यूनल हार्मेनी (1993-95)' के अंतर्गत आयोजित विशेष कैम्पिंग कार्यक्रमों से समुदाय और साथ ही छात्रों को लाभ पहुंचा है। विशेष कैम्पिंग के लिए 1995-96 से आगे के वर्षों का विषय वाटर शेड मैनेजमेंट और वाटर लैंड डवलपमेंट पर ध्यान केंद्रित करते हुए यूथ फॉर ससटेनेबल डवलपमेंट है। इन विषयों का चयन राष्ट्रीय वरीयताओं के आधार पर किया जाता है साथ ही 1991-92 से आगे एनएसएस ने ''यूनिवर्सिटीज टॉक एड्स'' (यूटीए) के संबंध में एक राष्ट्रवाद अभियान आरंभ किया है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय ध्यान और प्रशंसा अर्जित की है।[10]

विश्वविद्यालय और +2 स्तर के छात्रों द्वारा की गई समुदाय सेवा में विभिन्न पहलू शामिल किए गए हैं जैसे कि गहन विकास कार्य के लिए गांवों और शहरी बस्तियों को अपनाना, चिकित्सा- सामाजिक सर्वेक्षण करना, चिकित्सा केंद्रों की स्थापना, जन टीकाकरण कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान, समुदाय के कमजोर वर्गों के लिए प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, रक्तदान, अस्पतालों में रोगियों की सहायता, अनाथालयों और शारीरिक रूप से नि:शक्त व्यक्तियों की सहायता करना इत्यादि। एनएसएस के स्वयंसेवकों ने प्राकृतिक आपदाओं/आकस्मिकताओं जैसे चक्रवात, बाढ़, सूखा, भूकम्प, सुनामी इत्यादि के दौरान पूरे देश में समय-समय पर सराहनीय राहत कार्य किया है। एनएसएस के छात्रों ने सामाजिक बुराईयों को दूर करने और राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत उद्देश्यों जैसे कि राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक सौहार्द और वैज्ञानिक पृवत्ति के विकास को लोकप्रिय बनाने के लिए अभियानों का आयोजित करने में भी उपयोगी कार्य किया है।[11]

विचार-विमर्श

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) भारत सरकार के युवा मामले एवं खेल मंत्रालय द्वारा संचालित एक केन्द्रीय योजना है। जिसका उद्देश्य सभी युवा छात्रों को सामुदायिक सेवा गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए अवसर प्रदान करना है चाहे वह +2 बोर्ड स्तर का छात्र हो, तकनीकी संस्थान, ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट या विश्वविद्यालय का छात्र हो। राष्ट्रीय सेवा योजना का एकमात्र उद्देश्य युवा छात्रों को सामुदायिक सेवा देने में अनुभव प्रदान करना है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत प्रमुख गतिविधियां

1. राष्ट्रीय एकता शिविर: राष्ट्रीय एकता शिविर (एनआईसी) हर साल आयोजित किया जाता है और प्रत्येक शिविर की अवधि दिन-रात बोर्डिंग और लॉजिंग (आना जाना और रुकना) के साथ 7 दिन का होता है।

2. साहसिक कार्यक्रम: ये कार्यक्रम हर साल आयोजित किए जाते हैं, जिनमें लगभग 1500 राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवकों द्वारा भाग लिया जाता है, जिनमें से कम से कम 50% स्वयंसेवक लड़कियां होती हैं। ये शिविर उत्तरी पूर्व क्षेत्र अरुणाचल प्रदेश और हिमालयी क्षेत्र में आयोजित किए जाते हैं।[12]

3. गणतंत्र दिवस परेड शिविर: शिविर हर साल 1 से 31 जनवरी के बीच दिल्ली में होता है। एनएसएस का यह दल राजपथ पर नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस की परेड में भी शामिल होता है।

4. राष्ट्रीय युवा महोत्सव: देश के विभिन्न हिस्सों में राज्य सरकारों के सहयोग से राष्ट्रीय युवा महोत्सव हर साल 12 से 16 जनवरी तक भारत सरकार के युवा मामलों और खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित किए जाता है।

एनएसएस में ऐसे कराएं रजिस्ट्रेशन
राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवक के रूप में नामांकन करने के लिए अपने स्कूल / कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी से संपर्क करें। राष्ट्रीय सेवा योजना में रजिस्ट्रेशन फ्री है। राष्ट्रीय सेवा योजना में स्वयंसेवक को दो साल की अवधि में कुल 240 घंटे की सामाजिक सेवा समर्पित करना आवश्यक है। राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवक को प्रति वर्ष 20 घंटे उन्मुखीकरण और 100 घंटे सामुदायिक सेवा में देना पड़ता है।[13]

एनएसएस के उद्देश्य:
1. जिस समुदाय में काम कर रहे हैं, उसे समझना।

2. समुदाय की समस्याओं को जानना और उन्हें हल करने के लिए उनको शामिल करना।

3. सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारी की भावना का विकास करना।

4. समूह स्तर पर जिम्मेदारियों को बांटने के लिए आवश्यक क्षमता का विकास करना।

5. आपातकाल और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए उनको विकसित करना।

6. राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता का अभ्यास करना।

7. नेतृत्व गुणों और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को प्राप्त करना।[14]

8. सामुदायिक भागेदारी को जुटाने के कौशल को प्राप्त करना।
राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) भारत सरकार के युवा और खेल मंत्रालय की एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है, जिसे औपचारिक रूप से 24 सितंबर, 1969 को शुरू किया गया। यह ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के छात्रों और स्कूलों के छात्र युवाओं को अवसर प्रदान करता है। भारत के कॉलेजों और विश्वविद्यालय स्तर पर तकनीकी संस्थान, स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर विभिन्न सरकारी नेतृत्व वाली सामुदायिक सेवा गतिविधियों और कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए। एक सक्रिय सदस्य होने के नाते इन छात्र स्वयंसेवकों के पास एक कुशल सामाजिक नेता, कुशल प्रशासक और मानव स्वभाव को समझने वाले व्यक्ति होने का प्रदर्शन और अनुभव होगा।[15]

एन.एस.एस के उद्देश्य

एन.एस.एस का एकमात्र उद्देश्य युवा छात्रों को सामुदायिक सेवा के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए अनुभव प्रदान करना है।

एन.एस.एस आदर्श वाक्य

राष्ट्रीय सेवा योजना का आदर्श वाक्य है "मैं नहीं, लेकिन तुम"।

एन.एस.एस बैज

सभी युवा स्वयंसेवक जो एनएसएस के नेतृत्व वाली सामुदायिक सेवा के माध्यम से देश की सेवा करने का विकल्प चुनते हैं, एनएसएस बैज को गर्व और जरूरतमंदों की मदद करने के लिए जिम्मेदारी की भावना के साथ पहनते हैं। NSS बैज में कोणार्क व्हील 8 बार होता है, जो दिन के 24 घंटों का संकेत देता है, पहनने वाले को राष्ट्र की सेवा के लिए तैयार रहने की याद दिलाता है, यानी 24 घंटे। बैज में लाल रंग एनएसएस स्वयंसेवकों द्वारा प्रदर्शित ऊर्जा और भावना को दर्शाता है। नीला रंग उस ब्रह्मांड को दर्शाता है, जिसमें एनएसएस एक छोटा सा हिस्सा है, जो मानव जाति के कल्याण के लिए अपना योगदान देने के लिए तैयार है।[16]

परिणाम

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के बारे में:
राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) भारत सरकार, युवा मामलों एवं खेल मंत्रालय की एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है, जिसे 24 सितंबर, 1969 को शुरू किया गया । यह +2 बोर्ड स्तर पर स्कूलों के 11वीं तथा 12वीं कक्षा के छात्र युवा एवं तकनीकी संस्थान के छात्र युवा, कॉलेजों एवं भारत के विश्वविद्यालय स्तर पर स्नातक तथा स्नातकोत्तर विभिन्न सरकारी नेतृत्व वाली सामुदायिक सेवा गतिविधियों तथा

कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर प्रदान करता है। एनएसएस का एकमात्र उद्देश्य युवा छात्रों को सामुदायिक सेवा प्रदान करने का अनुभव प्रदान करना है।

एनएसएस बैज को राष्ट्र की सेवा करने पर गर्व है:

सभी युवा स्वयंसेवक जो एनएसएस के नेतृत्व वाली सामुदायिक सेवा के माध्यम से देश की सेवा करने का विकल्प चुनते हैं, एनएसएस बैज को गर्व एवं जरूरतमंदों की मदद करने के लिए जिम्मेदारी की भावना के साथ पहनते हैं। NSS बैज में कोणार्क व्हील 8 बार होता है, जो दिन के 24 घंटों का संकेत देता है, पहनने वाले को राष्ट्र की सेवा के लिए तैयार रहने की याद दिलाता है, यानी 24 घंटे। बैज में लाल रंग एनएसएस स्वयंसेवकों द्वारा प्रदर्शित ऊर्जा एवं भावना को दर्शाता है। नीला रंग उस ब्रह्मांड को दर्शाता है, जिसमें एनएसएस एक छोटा सा हिस्सा है, जो मानव जाति के कल्याण के लिए अपना योगदान देने के लिए तैयार है।[17]

राष्ट्रीय एकता शिविर के उद्देश्य:

राजकीय महाविद्यालय सुमेरपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाइयाँ, सामुदायिक सेवा के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व का विकास करने शिक्षित अशिक्षित जनता के बीच की खाई को पाटने के उद्देश्य से कार्य करती हैं। राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, महिला सशक्तिकरण, कन्या भ्रूण हत्या, साक्षरता, जैसे विभिन्न मुद्दों पर सामाजिक जागरूकता पैदा करने के लिए एनएसएस व्याख्यान के साथ-साथ क्षेत्रीय गतिविधियों जैसे श्रमदान, रक्तदान,युवा एकता ,कौमी एकता कार्यक्रमों के माध्यम से सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में सक्रिय रूप से शामिल हैं।

आदर्श वाक्य:

राष्ट्रीय सेवा योजना का आदर्श वाक्य :NOT ME BUT YOU

एनएसएस स्वयंसेवक होने के लाभ:

एक एनएसएस स्वयंसेवक जो सामुदायिक सेवा कार्यक्रम में भाग लेता है वह या तो कॉलेज स्तर का होगा या वरिष्ठ माध्यमिक स्तर का छात्र होगा। एक सक्रिय सदस्य होने के नाते इन छात्र स्वयंसेवकों के पास निम्नलिखित होने का अनुभव होगा:[18]

- एक कुशल सामाजिक नेता
- एक कुशल प्रशासक
- एक व्यक्ति जो मानव स्वभाव को समझता है

प्रमुख गतिविधियां:

राष्ट्रीय एकता शिविर (एनआईसी) हर साल आयोजित किया जाता है तथा प्रत्येक शिविर की अवधि 7 दिनों की होती है

निष्कर्ष

इन 51 वर्षों में एनएसएस ने निःस्वार्थ भाव से 'स्वयं से पहले आप' आदर्श वाक्य के साथ समाज सेवा के क्षेत्र में एक विशेष आयाम प्राप्त कर लिया है। यह पहचान आगे भी इसी प्रकार रहेगी, यह विश्वास स्वयंसेवियों के प्रयासों को देख कर दृढ़ होता है। सरकार को भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों के विषय में गहन चिंतन कर उन्हें क्रियान्वित करना चाहिए[19]

राष्ट्रीय सेवा योजना, ऊर्जा से परिपूर्ण एक ऐसा नाम, जो युवाओं में निःस्वार्थ भाव, सेवा संकल्प, सच्चाई व नेतृत्व जैसे गुणों का विकास कर देता है, यानी राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े युवाओं के लिए एनएसएस स्वयंसेवी नाम होने से ही उन्हें प्रेरणा व ऊर्जा का गर्वमयी आभास होने लगता है। राष्ट्रीय सेवा योजना भारत सरकार के युवा मामले व खेल मंत्रालय का एक संगठित कार्यक्रम है जोकि राष्ट्र के युवाओं में नेतृत्व, सामूहिक एकता व सेवा भाव लाने में आधुनिक समय में एक बहुत बड़ा सशक्त साधन सिद्ध हो रहा है। राष्ट्रीय सेवा योजना को इसके स्थापना के उद्देश्य से समझने का प्रयास करें तो धरती पर कुछ भी निश्चित नहीं है। प्रकृति कभी न कभी अपना विराट रूप दिखाती ही है और आपदाओं को जन्म देती है जिससे जान-माल को भारी नुकसान होने की संभावना बनी रहती है। ऐसी स्थिति में सरकारी और गैर-सरकारी संगठन सहायता और रोग-उपचार के लिए अनेक समुदाय व संस्थाएं सामने आती हैं, लेकिन

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 1, Issue 1, September 2014 |

यह सदा संभव नहीं होता कि वे समय पर पहुंचें। कई कारक ऐसे होते हैं जिनकी वजह से इनके कार्यों में रुकावट आना लाजमी है। इसलिए अनेकों स्वयंसेवी संस्थाएं अस्तित्व में आईं और सामाजिक कल्याण के लिए निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्य में जुट गइंर्। इन्हीं स्वयंसेवी संस्थाओं में मुख्य नाम आता है छात्रों व युवाओं की संस्था राष्ट्रीय सेवा योजना का। एनएसएस एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो 24 सितंबर सन 1969 को अस्तित्व मंे आई जिसमें प्रत्येक वर्ष लाखों स्वयंसेवी पंजीकृत होते हैं तथा सामाजिक कार्यों का हिस्सा बनते हैं। देश में कहीं भी बाढ़, आग, सूखा, भुखमरी, महामारी या अन्य कोई आपदा आती है तो सर्वप्रथम एनएसएस के स्वयंसेवी ही सक्रिय तौर पर सेवा व बचाव राहत कार्यों में बिना बोले जुट जाते हैं।[20]

ये स्वयंसेवी किसी के आदेश का इंतजार नहीं करते बल्कि स्वयं ही स्वयंसेवी होने का कर्त्तव्य निभाकर सेवा कार्यों में जुट जाते हैं। यहां तक कि कई बार पर्याप्त साधनों के अभाव में भी अपने स्तर पर बचाव कार्यों को पूरा करते हैं। बचाव कार्यों के अलावा स्वयंसेवी स्वच्छता कार्यक्रम, पौधारोपण कार्यक्रम, रक्तदान शिविर, सांस्कृतिक सम्मेलन, नेतृत्व की पहचान व परख, नशा निवारण जागरूकता कार्यक्रम भी चलाते हैं तथा लोगों तक सरकार की विभिन्न जनहितकारी निर्मल ग्राम योजना व स्वच्छ भारत मिशन जैसी नीतियों को भी जमीनी स्तर पर पहुंचाते हैं तथा लोगों को विभिन्न शिविरों, रैलियों व अन्य माध्यमों से जागरूक करते हैं। एनएसएस हिमाचल प्रदेश ने भी समाजसेवा में अनेक अभियान ऐसे चलाए हंै जिनसे राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवियों के कार्य समाज में सराहे गए हैं। इनमें मिशन डिजिटल कोरोअवेयर, ज्ञान दान एनएसएस मेरी पाठशाला, घरै हिमाचली खरै हिमाचली, इंच वन टीच वन, इंच वन वन हण्डरड वन, बुजुर्गों की देखरेख व कोरोना काल में भ्रामकता को दूर कर स्वस्थ जानकारी समाज तक पहुंचाने के अनेक मुख्य अभियान चलाए गए हैं। एनएसएस सुनने को तो नाम एक छोटा है लेकिन इसके पीछे छिपे 1969 स्थापना वर्ष से लेकर आज तक के अध्याय की बात करंे तो यह एक बहुत बड़ा व्यापक अध्याय सामने आ जाता है। आज स्कूलों, महाविद्यालयों में युवाओं की पहली पंसद एनएसएस बनती जा रही है। एनएसएस युवाओं में नेतृत्व की क्षमता को निखार रही है तथा राष्ट्र को नेतृत्ववान व बहुमुखी प्रतिभा से परिपूर्ण युवा भेंट कर रहा है। राष्ट्रीय सेवा योजना में स्वयंसेवक को दो साल की अवधि में कुल 240 घंटे की सामाजिक सेवा समर्पित करना आवश्यक होता है। राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवक को प्रति वर्ष 20 घंटे उन्मुखीकरण और 100 घंटे सामुदायिक सेवा में देना पड़ता है। एनएसएस में युवाओं के कार्य उद्देश्यों की बात करें तो एक एनएसएस स्वयंसेवी का कार्य जिस समुदाय में काम कर रहे हैं, [21]उसे समझना, समुदाय की समस्याओं को जानना और उन्हें हल करने के लिए उनको शामिल करना, सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारी की भावना का विकास करना, समूह स्तर पर जिम्मेदारियों को बांटने के लिए आवश्यक क्षमता का विकास करना, आपातकाल और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए उनको विकसित करना व राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता का अभ्यास करना इत्यादि प्रमुख कार्य हैं जिन्हें एक एनएसएस स्वयंसेवी इस संस्था में रहकर करता है। वर्तमान कोरोना काल की बात करंे तो भी अगर आकलन युवा स्वयंसेवी संस्थाओं के सेवा व जागरूकता कार्यों का करें तो केवल राष्ट्रीय सेवा योजना के युवा स्वयंसेवी ही नजर आते हैं जिनके कार्यों की समाज में सराहना भी होती है। [22]इसके अलावा एनएसएस प्रत्येक वर्ष अपने उद्देश्यों के अनुरूप सामाजिक सेवा कार्य करता है तथा मानसिक व सामाजिक रूप से एक स्वस्थ समाज की स्थापना करता है। शिक्षा के साथ व्यक्ति का संपूर्ण सामाजिक, मानसिक, शारीरिक व शैक्षणिक विकास करना ही एनएसएस की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य है। [23]24 सितंबर 1969 को स्थापित इस स्वयंसेवी संस्था ने समाज में अपनी एक अलग आदर्श पहचान कायम की है तथा आने वाले समय में भी युवा स्वयंसेवी एनएसएस को एक आदर्श स्थान तक पहुंचाने में अपना संपूर्ण योगदान दे रहे हैं। एनएसएस से जुड़कर युवाओं के व्यक्तित्व, चरित्र व आत्मिक का विकास होता है। राष्ट्रीय सेवा योजना का स्थापना वर्ष 1969 से लेकर आज तक का 51 वर्षों का सफर एक गर्वमयी सफर रहा है। [24]इन 51 वर्षों में एनएसएस ने देश व समाज को असंख्य नेतृत्वान युवा प्रदान किए हैं जिनके प्रयासों से समाज का सार्वभौमिक विकास हुआ है तथा इन एनएसएस स्वयंसेवियों ने राष्ट्र निर्माण में भी अपनी अग्रणी भूमिका अभिनीत की है। इन 51 वर्षों मंे एनएसएस ने निःस्वार्थ भाव से 'स्वयं से पहले आप' आदर्श वाक्य के साथ समाज सेवा के क्षेत्र में एक विशेष आयाम प्राप्त कर लिया है। यह पहचान आगे भी इसी प्रकार रहेगी, यह विश्वास स्वयंसेवियों के प्रयासों को देख कर दृढ़ होता है। सरकार को भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों के विषय में गहन चिंतन कर उन्हें क्रियान्वित करना चाहिए। व्यक्ति के संपूर्ण विकास का यह साधन सही मायने में एक आदर्श संस्था है जो राष्ट्र व समाज की सेवा में शानदार भूमिका निभा रही है।[25]

संदर्भ

1) "युवा मामलों और खेल मंत्रालय" ।
2) ^ "हमसे संपर्क करें | राष्ट्रीय सेवा योजना" ।
3) ^ "राष्ट्रीय सेवा योजना | युवा मामले और खेल मंत्रालय | भारत सरकार" ।
4) ^ https://nss.gov.in/sites/default/files/Gujarat_0.pdf [नंगे यूआरएल पीडीएफ]
5) ^ https://nss.gov.in/sites/default/files/Madhya%20Pradesh.pdf [नंगे यूआरएल पीडीएफ]
6) ^ "संग्रहीत प्रति" (पीडीएफ) । मूल (पीडीएफ) से 2013-12-16 को पुरालेखित । 2013-12-16 को पुनःप्राप्त ।
7) ^ "संग्रहीत प्रति" (पीडीएफ) । मूल (पीडीएफ) से 2013-12-16 को पुरालेखित । 2013-12-16 को पुनःप्राप्त ।
8) ^ https://nss.gov.in/sites/default/files/Mizoram.pdf [नंगे यूआरएल पीडीएफ]

9) ^ https://nss.gov.in/sites/default/files/Andhra%20Pradesh.pdf [नंगे यूआरएल पीडीएफ]
10) ^ https://nss.gov.in/sites/default/files/west%20bengal.pdf [नंगे यूआरएल पीडीएफ]
11) ^ https://nss.gov.in/sites/default/files/Bihar.pdf [नंगे यूआरएल पीडीएफ]
12) ^ "संग्रहीत प्रति" (पीडीएफ) । मूल (पीडीएफ) से 2013-12-16 को पुरालेखित । 2013-12-16 को पुनःप्राप्त ।
13) ^ https://nss.gov.in/sites/default/files/Goa_0.pdf [नंगे यूआरएल पीडीएफ]
14) ^ "हमसे संपर्क करें | राष्ट्रीय सेवा योजना" ।
15) ^ "एनएसएस निर्देशिका | राष्ट्रीय सेवा योजना" ।
16) ^ " @askabir_ " ट्विटर पर
17) ^ "एनएसएस - राष्ट्रीय सेवा योजना" । 2013-09-17 को मूल से संग्रहीत । 2013-09-16 को पुनःप्राप्त ।
18) ^ राष्ट्रीय सेवा योजना-एनआईटी कालीकट अध्याय 2012-08-01 को पुनःप्राप्त।
19) ^ राष्ट्रीय सेवा योजना - पीजीडीएवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय एनएसएस पीजीडीएवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
20) राष्ट्रीय सेवा योजना: ख्वाजाला गुलाम सैय्यदैन की एक रिपोर्ट। शिक्षा मंत्रालय, सरकार द्वारा प्रकाशित। ऑफ इंडिया , 1961।
21) राष्ट्रीय सेवा योजना में प्रशिक्षण और परामर्श की आवश्यकता , एन.एफ. कैकोबाद, कृष्ण के. कपिल द्वारा। टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (TISS) द्वारा प्रकाशित , 1971।
22) राष्ट्रीय सेवा योजना: आंध्र विश्वविद्यालय, समाजशास्त्र और सामाजिक कार्य विभाग द्वारा प्रोजेक्ट-मास्टर्स के लिए गाइड-लाइन । समाजशास्त्र और सामाजिक कार्य विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय , 1971 द्वारा प्रकाशित।
23) गुजरात में राष्ट्रीय सेवा योजना: टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज ट्रेनिंग ओरिएंटेशन एंड रिसर्च सेंटर (एनएसएस), भारत, भारत द्वारा वर्ष 1986-87 के लिए एक मूल्यांकन रिपोर्ट । युवा मामले और खेल विभाग। केंद्र, 1987 द्वारा प्रकाशित।
24) महाराष्ट्र में राष्ट्रीय सेवा योजना: टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज ट्रेनिंग ओरिएंटेशन एंड रिसर्च सेंटर (NSS), भारत, युवा मामलों और खेल विभाग द्वारा वर्ष 1986-87 के लिए एक मूल्यांकन रिपोर्ट । केंद्र, 1988 द्वारा प्रकाशित।
25) भारत में राष्ट्रीय सेवा योजना: एमबी दिलशाद द्वारा कर्नाटक की एक केस स्टडी । ट्रस्ट प्रकाशन द्वारा प्रकाशित, 2001।